कल्पपञ्चकप्रयोग



श्रीः

कल्पपञ्चकप्रयोगः

अर्थात्

चोपचीनीकल्प-रुद्रवन्तीकल्प-नागदमनीकल्प-शिवलिंगीकल्प-पलाशकल्पात्मकः



मुरादाबादवास्तव्यपण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृत

भाषाटीकासहितः



मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४

संस्करण : जुन २०१३, संवत् २०७०

मूल्य : २० रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४००.००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

भूमिका

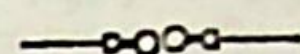
यद्यपि वैद्यकग्रन्थोंमें बड़े बड़े कल्प विख्यात हैं परन्तु कुछ गुरुलक्ष्य कल्प ऐसे हैं कि जिनका प्रयोग व्यर्थ नहीं जाता। ऐसे ही यह पांच कल्प जगद्विख्यात "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् यन्त्रालयाध्यक्षद्वारा हमको प्राप्त हुए थे इनको सर्वसाधारणके उपयोगी जान कर भाषाटीका सहित शुद्ध कर यह ग्रन्थ सेठजी श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजी महोदयको समर्पित है। आशा है कि बुद्धिमान् इस छोटेसे ग्रन्थको देखकर लाभ उठावेंगे।

१५।९।०१ दीनदारपुरा मुरादाबाद. { सज्जनोंका कृपाभिलाषी - पण्डितज्वालाप्रसादमिश्र०

श्रीः

कल्पपञ्चकप्रयोगः

भाषाटीकासहितः



चोपचीनीकल्प १

सामुद्रिको वृक्षराजः शुक्लाङ्गो दीर्घकर्णकः ।
उदीच्यां दिशिजं काष्ठं म्लेच्छभाषितदारुकम् ॥१॥

सामुद्रिक, वृक्षराज, शुक्लांग दीर्घकर्णक यह चोपचीनीके नाम हैं यह उत्तरके देशोंमें होता है म्लेच्छभाषामें इस काष्ठका नाम चोवचीनी कहते हैं ॥ १ ॥

अमृतो वह्निकृत्प्रोक्तः कामुकव्याधिनाशनः ।
म्लेच्छकाष्ठं सदा खादेन्नानावायुनिबर्हणम् ॥ २ ॥

यह अमृतरूप अग्निदीपक है कामियोंकी व्याधि दूर करता है. इसका सदा सेवन करनेसे अनेक प्रकारके वायुके रोग दूर होते हैं ॥ २ ॥

धातुक्षयं चाग्निमान्द्यं यक्ष्मराजं विनाशयेत ।
रक्तपित्तं वातरक्तं दद्रुकण्डू विनाशयेत् ॥ ३ ॥

धातुक्षय, मन्दाग्नि और राजयक्ष्मा रोगको दूर करता है रक्त, पित्त, वातरक्त, दाद और खुजलीको निवारण करता है ॥ ३ ॥

कासं श्वासं तथा शूलं सन्धिवातं विनाशयेत् ।
पर्वाङ्गकम्पे कुब्जत्वे पक्ष घाते कटिग्रहे ॥ ४ ॥

खांसी, श्वास, शूल, वातसंधि, सम्पूर्ण अंगकी कँपकँपी, कुबडापन, पक्षाघात कटिग्रहमें प्रयोग करनेसे यह रोग नष्ट होते हैं ॥ ४ ॥

ऊरुस्तंभे व्रणे नेत्ररोगे देयोऽनुपानतः ।
गण्डमालासु घोरासु रेतोदोषे नियोजयेत् ॥ ५ ॥

उरुस्तंभ, व्रण, नेत्ररोगादिमें अनुपानके साथ देना, घोर गण्डमाला और वीर्यदोषमें इसको नियुक्त करे ॥ ५ ॥

रजोदोषहरं स्त्रीणां म्लेच्छकाष्ठं सदा हितम् ।
सेवेत ऋतुपर्यायैर्यथारोगानुपानतः ॥ ६ ॥

यह चोबचीनी स्त्रियोंके रजोदोषकी हरनेवाली है ऋतुके पर्यायमें रोगानुसार अनुपानसे इसको सेवन करे तो रोग दूर होते हैं ॥ ६ ॥

वृक्षराजस्य चूर्णं तु पात्रतोये विपाचयेत् ।
तत्पक्वं मधुना लेह्यं तत्तोयं पानभोजनैः ॥ ७ ॥

इस वृक्षराजके चूर्णको आठसेर जलमें औटावे वह पक्व जानेपर शहतके साथ पान भोजनमें हित कारक है ॥ ७ ॥

पिप्पलीभागमेकन्तु वृक्षराजत्रिभागकम् ।
मधुनाक्ते लिहेत्प्रातः सन्ध्याकालेऽपि यत्नतः ॥८॥

पीपल एक भाग चोबचीनी तीन भाग यह शहतके साथ मिलाकर प्रातः और सन्ध्याको शहतके साथ चाटे तो ॥ ८ ॥

धनुर्वातं निहन्त्याशु कोष्ठवातं तथैव च ।
शीतवातं तथा शैत्यं यथा सूर्योदये तमः ॥ ९ ॥

धनुर्वात, कोष्ठवात, शीतवात, और शीतको इसप्रकार दूर करताहै जैसे सूर्यके उदयमें अंधकार दूर हो जाता है ॥ ९ ॥

शीतकाले सदा सेव्यं सत्यमेतद्ब्रवीम्यहम् ।
चित्रकंपिप्पलीमूलं रेणुकं नागरं तथा ॥ १० ॥

शीतकालमें सदा इसको सेवन करना चाहिये यह मैं सत्यही कहताहूं । चीता, पीपलामूल, पित्तपापडा, सोंठ ॥ १० ॥

बलामूलं च कोष्ठंच पिप्पली मरिचान्विता ।
वचा गर्दभशाकं च कटुकं कट्फलं तथा ॥ ११ ॥

वरियारीकी जड, कूट, छोटी पीपल, कालीमिर्च, वच भारंगी, कुटकी, कट्फल ॥ ११ ॥

भागद्वयमिदं ग्राह्यं चतुर्भागं तथा द्रुमम् ।
मधुना सह लिहेदेतत्पिबेदुष्णाम्बु नित्यशः ॥१२॥

यह सब वस्तु दो भाग और चोबचीनी चार भाग ग्रहण करे शहतके साथ इसे चाटे और नित्य गरम जल पिये ॥ १२ ॥

खादेदग्निकरं पुंसां कर्षद्वयमुदाहृतम् । अशी-
तिवातजा रोगाः प्रणश्यन्ति न संशयः ॥ १३ ॥

यह ३२ मासे खानेसे अग्नि बढतीहै इसके सेवनसे अस्सी प्रकारके वातरोग नष्टहोते हैं इसमें सन्देह नहीं ॥ १३ ॥

सेव्यमेकं माससात्रं पथ्यं मासद्वयं हितम् ।
गोधूमान्नं तथाज्यं च गुडं भुक्त्वा सुखीभवेत् १४

एक महीने तक इसको सेवन करके दो महीने तक पथ्य करना चाहिये, गेहूं, घी, और गुड़का पथ्य खाना चाहिये इससे सुख होगा ॥ १४ ॥

उष्णं वारि पिबेन्नित्यं स्त्रीरातिं परिवर्जयेत ।
एवं नरः प्रकुर्वीत व्याधिनश्यति सत्वरम् ॥ १५ ॥

नित्य गरम जल पिये स्त्रीकी रति त्याग दे इस प्रकार करनेसे शीघ्र ही मनुष्योंकी व्याधि दूर होती है ॥ १५ ॥

स्त्रियाः सेव्यं प्रयत्नेन प्रवाहं धातुजं शमेत् ।
बालकं बहुशं ग्राह्यं वारंवारं पुनः पुनः ॥ १६ ॥

फिर प्रयत्न अर्थात् कुछ दिनके अन्तरसे नियमित स्त्री सेवन करनेसे धातुका प्रवाह शान्त हो जाता है और बहुतसे नेत्रवालेको लेकर उसके साथ सेवन करे तो ॥ १६ ॥

वीर्यं वर्द्धयते बलं च कुरुते कामाग्निसंदीप्यते कान्तां द्रावयते दृढं च कुरुते तारुण्यमातन्वते ॥ स्त्रीणां वल्लभकामदं च पुष्टिं धत्ते परं बृंहणम् । रेतोवृद्धिकरं रसायनवरं गर्भप्रदं योषिताम् ॥ १७ ॥

यह वीर्य वृद्धिकारक तथा बलपोषक कामाग्निको सन्दीपन करता स्त्रियोंका द्रावण करनेवाला बल प्रगट करके तरुणाईको विस्तार करता है स्त्रियोंका प्रिय शरीरमें काम बढानेवाला बल-वीर्यवर्द्धक रसायन और स्त्रियोंको गर्भ धारण करनेवाला है ॥१७॥

मार्गे पौषे तथामाघे ह्याषाढादित्रये तथा
सेवनीयं प्रयत्नेन यथारोगानुपानतः ॥ १८ ॥

यह वस्तु मार्गशीर्ष, पूष, माघ तथा आषाढादि तीन महीनेमें प्रयत्नसे रोगानुसार अनुपानसे सेवन करनी चाहिये ॥ १८ ॥

वाष्पिकानागभागैकं भागैकन्तु प्रकीर्तितम् ॥
भागत्रयं तु काष्ठस्य मधुना सह लेपयेत् ॥१९॥

मरसा १ भाग नागकेशर १ भाग कहीं "जीरकं नागरं पथ्या भागैकन्तु प्रकीर्तितम्" यह पाठ है अर्थात् जीरा सोंठ और हर्र यह एक भाग चोबचीनी तीन भाग लेकर मधुके साथ मिलाय ॥ १९ ॥

कर्षद्वयं सदा खादेत्कासश्वासार्दितो नरः ॥
फाल्गुने चैत्रमासे तु सेवनीयं प्रयत्नतः ॥२०॥

यह ३२ मासे सदा खाये यह खांसी और श्वासवालेको अति-हितकारक है उसके सेवनसे यह रोग जाते हैं फाल्गुन और चैत्र मासमें यत्नसे इसको सेवन करना चाहिये ॥ २० ॥

जातीफलं लवंगं च जातीपत्रं च पिप्पली ॥
चातुर्जातं ग्रन्थिकं च ह्यजमोदा यवानिका ॥२१॥

जायफल, लौंग, जावित्री, पीपल, तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, पीपलामूल, अजमोद, अजवायन ॥ २१ ॥

मर्कटीबीजशाल्मल्यौवाजिगन्धातथाल्पकम् ॥
समुद्रशोषफेनं च कनकं वंशलोचनम् ॥ २२ ॥

कौंचके बीज, दोनों सेमल, असगन्ध, जवासा, समुद्रशोष, समुद्रफेन, कनक (धतूरा), वंशलोचन ॥ २२ ॥

मूसलीकन्दमादाय सर्वमेकत्र कारयेत् ॥
वस्त्रेण गालितं चूर्णं काष्ठभागद्वयं क्षिपेत ॥२३॥

मूसलीकन्द इन सब औषधियोंको लेकर एकत्र करे और इनको कूटकर वस्त्रमें छानले इनसे दूनी चोबचीनी डाले कहीं (माषभागद्वयम्) पाठ है अर्थात् दोभाग उर्दका आटा डाले ॥ २३ ॥

आज्येन मधुना लेह्यं वीर्यस्तंभकरं परम् ।
पुंसामानन्दकारः स्यात्सर्वरोगविनाशनम् ॥ २४ ॥

घृत और मधुके साथ इसको चाटनेसे वीर्य स्तंभित होता है यह पुरुषोंका आनन्द करनेवाला सब रोगका नाशक है घी शहत न्यूनाधिक लेना चाहिये ॥ २४ ॥

गोधूमपिष्टघृतशर्करया प्रयुक्तं हृच्छूलसारम-
खिलं विधिना विपाच्यम् । षण्ढोपि खादति

युवा सकलान्प्रमेहान् नाशाय शोधनकृतः स पुमान् सुखीस्यात् ॥ २५ ॥

गेहूँको पीसकर उसमें घी बूरा चोबचीनी डालकर चासनीसे विधिपूर्वक पकाले यदि इसका सेवन करे तो नपुंसकभी इसके खानेसे युवा हो जाता है हृदयके सब शूल सब प्रमेह नाश होते हैं यह शोधनकारी है इसके सेवनसे पुरुष सुखी होता है ॥ २५ ॥

अथ चोपचीनीपाकः

कन्दं चीनिसमुद्भवं घनदलं प्रस्थार्द्धमानं क्षिपेत् प्रस्थैकप्रमितं च मर्कटिरजःक्षीराढके पाचितम् ॥ काश्मीरागरुदेवपुष्पतगरं जातीफलं मार्कवं कंकोलं घनपुष्पयुक्तमभया गुंजाफलं मागधी ॥ २६ ॥

चोपचीनीकन्द, नागरमोथा यह आधसेर ले इसमें एकसेर कौंचके बीजोंका चूर्ण डाले इसे सवा तीनसेर दूधमें पकावे, पकते में केशर, अगर, लौंग, तगर, जायफल, भांगरा, कालीमिर्च, मोथा, हर, श्वेत चौंटली, सोंठ ॥ २६ ॥

मुण्डीमागधिमूलकं गुणिबलाशुण्ठीकुबेराक्षकं चातुर्जातकचित्रकं सठियुगं रस्यद्रुमाकल्लकम् ॥ अब्धेः शोषकवावचीनिमरिचं सौराष्ट्रकं गोक्षुरं शीते तत्र सितोपला सममिता कल्कीकृता मिश्रिता ॥ २७ ॥

मुण्डी, पीपलामूल, मासरोहिणी, बरियारी सोंठ, पाटल, तज, पत्रज, इलायची, नागकेशर, चीता, गन्धपलाशी, लालचन्दन, समुद्रशोष, कवाबचीनी, कालीमिर्च, कुन्दस, सुगन्धद्रव्य, गोखरू, यह सब समान भाग लेकर इनको बारीक करे इन सबका कल्क कर ठंडे होनेपर बराबर मिश्री डाले ॥ २७ ॥

आक्रोडं चारमज्जापलपलमुदितं वादामकं गोस्तनी नारीकेलदलं च टंकणयुतं कर्पूरकस्तूरिका ॥ वातव्याधिहरं प्रमेहशमनं मुग्धांगनामोहनश्चैत-द्व्याधिरसायनं गुणवतां संसेवनीयं हठात् ॥२८॥वीर्यस्तंभकरं महाबलकरं रामाकुलद्रावणम्। युत्तया वैद्यवरेण निर्मितमिदं पाकाधिराजं महत ॥ २९ ॥

वाराहीकन्द, चिरौंजीकी मींग, एक एक पल (३२ तोले) बादाम मुनक्का, तेजपात, सुहागा, कपूर, कस्तूरी अनुमानसे इसमें डाले, यह पाक सेवन करनेसे वातव्याधिका नाशक प्रमेहका हरनेवाला मुग्ध अंगनाओंका मोहित करनेवाला व्याधियोंको दूर करनेको रसायन है, गुणीजनोंको यह सदा सेवन करना चाहिये यह शुक्ररोधक महाबलकारक स्त्रीद्रावक है वैद्यश्रेष्ठने यह पाक निर्माण किया है ॥ २८ ॥ २९ ॥

इति पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत–भाषाटीकासहितः

चोपचीनीकल्पः समाप्तः ।

अथ रुद्रवन्तीकल्पप्रारम्भः २

कैलासशिखरे रम्ये देवदेवं महेश्वरम् ॥ पृच्छते सा महादेवी रुदन्तीकल्पमुत्तमम् ॥ १ ॥

मनोहर कैलासपर्वत पर महादेवी शिवजीसे रुद्रवन्तीकल्प पूछने लगी रुदन्तीके पत्ते चनेके पत्तेके समान होते हैं एक प्रकार का क्षुपवृक्ष है ॥ १ ॥

जायते केषु क्षेत्रेषु लक्ष्यते वा कथं प्रभो ।
एष मे संशयो देव प्रसाद कुरु शंकर ॥ २ ॥

हे देव यह किन क्षेत्रोंमें उत्पन्न होतीहै किस प्रकार दीखती है हे देव यह मेरा सन्देह आप कृपाकर दूर कीजिये ॥ २ ॥

श्रीमहादेव बोले

कथयाम्यत्र सम्भूता औषधी मृत्युनाशिनी ।
शिवालये भवेद्देवि औषधी देवपूजिता ॥ ३ ॥

हे देवी इस मृत्युनाशक औषधीका मैं वर्णन करता हूं यह देव पूजित औषधी बहुधा शिवस्थानोंके निकट होती है ॥ ३ ॥

गिरिकन्दरदुर्गेषु निकरेषु तथैव च । पुण्य-
क्षेत्रेषु सर्वेषु देवतायतनेषु च ॥ ४ ॥

पर्वतोंकी कन्दरा दुर्गमस्थान दूसरे पुण्यक्षेत्र और दूसरे देवागारोंके निकट प्रायः उत्पन्न होती है ॥ ४ ॥

चतुर्विधा च सा साध्या साधकेन महात्मना ।
श्वेता रक्ता तथा पीता कृष्णा तु पुनरेव सा ॥५॥

महात्मा साधकको यह चार प्रकारकी साधनी चाहिये यह श्वेत, लाल, पीली, और काली होती है ॥ ५ ॥

एभिर्वर्णैस्तु सा ज्ञेया औषधी परमेश्वरि ।
चणकपत्रकसादृश्या हेमभारी तपस्विनी ॥ ६ ॥

हे परमेश्वरी ! इन वर्णोंसे इस औषधीको पहचानना चाहिये चनेके पत्तोंके समान पत्ते होतेहैं, सुवर्णसी कान्ति तपस्विनीवत् जानो तथा वे पत्ते जलकी बूंदोंसे बिन्दुयुक्त होते हैं ॥ ६ ॥

यस्यां तु विन्दते तोयं हेमबिन्दुनिभाकृतिः ।
रुदन्ती सा समातिष्ठेल्लोकान् दृष्ट्वाऽतिदु-
स्तरान् ॥ ७ ॥

अर्थात् जिसके ऊपर हिमजल सुवर्णबिन्दुके समान दिखाई देता है वह लोकोंको दुस्तर देखकर रुद्रवन्ती ही कहती हुई मानो स्थित है ॥ ७ ॥

मयि च विद्यमानायां कथं क्लिश्यन्तिमानवः ।
तस्याहं तु प्रवक्ष्यामि विधानन्तु वरानने ॥८॥

मेरी विद्यमानतामें मनुष्य किस प्रकार क्लेश पाते हैं हे वरानने ! मैं उसका विधान कहता हूं ॥ ८ ॥

सकलापत्रमुद्धृत्य चूर्णं कृत्वा समाहितः ।
कटुकालयके स्थाप्य बिडालपदमात्रकम् ॥ ९ ॥

पत्ते सहित इसको उखाडकर छायामें सुखाय चूर्ण करले और कडवीतूंबीमें इसको रख छोडे इसमेंसे दो तोले ॥ ९ ॥

भक्षयेत्प्रातरुत्थाय घृतेन मधुना सह । जीर्णा-न्ते च ततो धीमान् कारयेत् क्षीरभोजनम् ॥१०॥

प्रभातहो उठकर घृत मधु न्यूनाधिक करके उसके साथ रुदन्ती खाय उसके जीर्ण होनेपर दूध पान करना चाहिये ॥ १० ॥

परिहारे न कर्तव्यं लवणात्मविवर्जितम् ।
मासमात्रप्रयोगेण जीवेद्वर्षशतं नरः ॥ ११ ॥

इसको त्यागेविना लवण न खाय एक महीने (कहीं छः महीने लिखा है) इसके प्रयोगसे मनुष्य सौवर्ष जीता है ॥ ११ ॥

तस्या रसं तु क्षीरेण मधुना सर्पिषा सह ।
पीत्वा महौषधीं धीमान् सप्त सप्त दिनानि तु १२

इसके रसको दूध, मधु और घीके साथ १४ दिन वा ४९ दिन पीनेसे ॥ १२ ॥

जायते तत्प्रयोगेण दिव्यचक्षुर्महाबलः ।
देवदानवसंचारी कामरूपी गुणान्वितः ॥ १३ ॥

इसके प्रयोगसे महावली दिव्यचक्षु होजाता है देवदानवोंके निकट विचरनेवाला कामरूपी सर्वगुणसम्पन्न होता है ॥ १३ ॥

सिद्धानामाधिपत्यं च न जरामरणं भवेत् ।
अथास्यास्तु विधिं वक्ष्ये शृणु तत्त्वेन सुन्दरि १४

वह सिद्धोंका अधिपति जरामरणरहित होता है, हे सुन्दरि इसकी विधि कहता हूं सुनो ॥ १४ ॥

तस्यास्तु ग्राह्यं पंचांगं चूर्णयित्वा तु भक्षयेत् ।
मधुसर्पिःसमायुक्तं बिडालपदमात्रकम् ॥ १५ ॥

इसके पञ्चांगको चूर्ण करके मधु और घीके साथ दो तोले नित्य खाय ॥ १५ ॥

जीवेद्वर्षशतं पूर्णं नान्यथेश्वरभाषितम् ।
सर्वव्याधिविनिर्मुक्तो वलीपलितवर्जितः ॥ १६ ॥

वह पूरे सौवर्ष जीता है इसमें अन्यथा नहीं है यह ईश्वरका कथन है वह सब व्याधीसे रहित वली और पलित बालके पकनेसे रहित होता है ॥ १६ ॥

गृध्रदृष्टिर्महातेजा वेगेन गरुडोपमः ।
जायते मतिमान् श्रीमान्प्रमदाजनवल्लभः ॥ १७ ॥

गृध्रके समान दूर जानेवाली दृष्टि वेगमें गरुडके समान मतिमान् श्रीमान् प्रमदाजनोंका प्रिय होता है ॥ १७ ॥

अन्यच्च

तामौषधीं समासाद्य शुक्ले पक्षे शुभे दिने ।
छायाशुष्कांच तांकृत्वाभक्षयेन्नियतेन्द्रियः ॥ १८ ॥

शुक्लपक्षके शुभदिनमें इस औषधीको लाकर उसको छायामें सुखाकर जितेन्द्रिय होकर भक्षण करे ॥ १८ ॥

विरेचवमनं कृत्वा बिडालपदमात्रया ।
भक्षयेन्मधुसर्पिर्भ्यां मासमेकं महौषधम् ॥
जीर्णान्तेभोजनं कुर्याद्दुग्धभक्तं नरो जहि ॥१९॥

विरेचनवमनसे कोष्ठशुद्धकर दोकर्ष मधु घृतसे इस महौषधिको एकमासतक एकतोला खाय इसके जीर्ण होनेपर भोजन करे दूध चावल खाये केवल दूध न खाय ॥ १९ ॥

दृढकायोऽतितेजस्वी सर्वरोगैः प्रमुच्यते ।
वलीपलितनिर्मुक्तो परमायुस्ततो भवेत् ॥ २० ॥

वह दृढकायायुक्त तेजस्वी होकर सब रोगोंसे छूट जाता है वह वलीपलितसे रहित होकर परमायुवाला होता है ॥ २० ॥

रसायनेषु सर्वेषु रुदन्ती प्रवरा भवेत ।
रुदन्तीदलमादाय रसेन सह मर्दयेत् ॥ २१ ॥

सब रसायनोंमें रुदन्ती श्रेष्ठ होती है, रुदन्तीके पत्ते लेकर पारेके साथ मर्दन करे ॥ २१ ॥

द्रुतं खल्वं विनिर्मुक्तं निर्बीजं कनकं भवेत् ।
दाहे छेदे कषे शुद्धे यावदारक्तसंप्लवे ॥ २२ ॥

शीघ्रतासे खरल करता जाय तो पारा शुद्धनिर्जीव हो जाता है दाह, छेदन, कष और रक्तविकारमें हितकर है ॥ २२ ॥

रसभागसमायुक्तं माक्षिकं च मनःशिला ।
गन्धकं दरदं चैव पीताभ्रसमभागकम् ॥ २३ ॥

पारेके भागकी सोनामक्खी, मनशिला, गन्धक, सिंगरफ और पीताभ्रक यह समान भाग ले ॥ २३ ॥

रुदन्त्याश्च रसेनैव मर्दयेद्घटिकात्रयम् ।
तेनैव तारपत्राणि पुटेनैकेन कांचनम् ॥ २४ ॥

रुदन्तीके रसमें तीन घडीतक मर्दन करे और इसीके रसकी ताम्र पत्रमें एक ही पुट देनेसे सुवर्ण शुद्ध होजाता है ॥ २४ ॥

रुदन्त्यंगानि सर्वाणि रसेन सह मर्दयेत् ।
अभ्रकं पीतमादाय दरिद्रनाशनं परम् ॥ २५ ॥

रुदन्तीके मूलपत्रादि सब अंग लेकर रस निकाल तथा पीताभ्रक लेकर रसके साथ मर्दन करे तो यह दरिद्र नाशक है ॥ २५ ॥

शुल्वं च तारतां याति चांगस्तंभानुमुत्तमम् ।
नागं च कुरुते हेम हेमाभ्रकसमन्वितम् ॥ २६ ॥

तांबा, रूपा कांतिमान् होता है और हेमाभ्रकके साथ योगको प्राप्त हुआ तांबा और सीसा इसके योगसे सुवर्ण होता है ॥ २६ ॥

तारशुल्वं च वंगं च चूर्णमादाय योजयेत् ।
यथाकर्मसमायुक्तं रसेन सह मर्दयेत् ॥ २७ ॥

रूपा, तांबा, वंग यह लेकर यथा योग्य इसके रसमें खरलकर चूर्ण करे ॥ २७ ॥

तारशुल्वं च वंगं च हेम नागं समाश्रयम् ।
हेम निर्बीजतां याति यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ २८ ॥

चांदी, तांबा, बंग, सुवर्ण, शीशा यह सब इसके रसमें शुद्ध होते हैं। चन्द्रदिवाकरकी स्थितिपर्यन्त सुवर्ण, निर्बीज हो जाता है ॥ २८ ॥

रुदन्तीमूलचूर्णन्तु विडस्यैव बलं विलम् ।
टंकणं तगरं कुष्ठं लोहानां द्रावणं परम् ॥ २९ ॥

रुदन्तीकी जडका चूर्ण सौचर, नौन, हींग, वैती, सुहागा, तगर, कूट, यह सब वस्तु लोहको द्रावण करती हैं ॥ २९ ॥

एवं रोगाणि सर्वाणि द्रावयेत्सविशेषतः ।
अथ लोहानि सर्वाणि द्रावयेदग्निसंस्थितः ॥ ३० ॥

इस प्रकार यह सब रोगोंको विशेषकर अनुपानसहित नाश करता है और अग्निमें स्थित सब रोगोंको दूर कर देता है ॥ ३० ॥

रुदन्तीपत्रनिर्यासं हेमाभ्रकरणं परम् ।
मर्दयेच्च करे धीमान् द्रुते खल्वे विनिक्षिपेत ॥३१॥

रुदन्तीके पत्तेका रस और गोद हेमाभ्र करनेवाला है बुद्धिमान् इसको हाथसे मर्दनकर खरलमें डाले ॥ ३१ ॥

प्रक्षालयित्वा चूर्णं च मेलयित्वा समाहरेत् ।
हेम निर्वीर्यतां याति यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ ३२ ॥
खाने पाने च लेपे च विषं हन्ति तु तत्क्षणात् ३३

फिर इसको धोकर यह चूर्ण डाले तो सुवर्ण निर्वीर्य होता है चन्द्र सूर्यकी स्थिति पर्यंत शुद्ध रहता है खान पान और लेपमें विषको तत्काल दूर करता है ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

इति मुरादाबादनिवासि-पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकासहितः रुद्रवन्तीकल्पः समाप्तः ।

अथ नागदमनीकल्पो लिख्यते ३.

तत्र साधकानां मनोरथसिद्ध्यर्थं कृपया श्रीमहेश्वरेण पार्वतीप्रत्युक्तम् । सा च कृष्ण-नालालाम्बुसदृशपत्रा सुवर्णवर्णा पीतपुष्पा नाग-दमनी नाम्नी लोकेषु प्रसिद्धा । दारिद्रजरारोगशमनी श्वरीनाम महौषधी । पुष्करारण्यनैमिषारण्यादौ बाहुल्येन प्राप्यते, सा च पुष्यादौ शुभदिने शिवा-दीन्प्रणम्य पूर्वदिने निमंत्रणपूर्वकं गृहीत्वा शिरसि कर्णे कण्ठे हस्ते बाह्वोर्मुद्रिकायां कण्ठे चैकैकांगे स्वस्तिवाचनपूर्वकं ब्राह्मणभोजनं कारयित्वा षोड-शोपचारेण चन्द्रशेखरं शंकरमाराध्य धृता सर्वानेव वशीकरोति शास्त्रयुक्तां बुद्धिं वर्द्धयति विघ्नं नाश-यति जलाग्निसिंहसर्पवृश्चिकाविषभयं वारयति विवादे शत्रुसंकटादिभ्यो रक्षति निगडयुक्तं शूलमारोप्य-माणा वा मोचयति नानाविषाणि दुष्टव्रणानि च गोमूत्रेण सह लेपिता नाशयति ।

भाषार्थः—अब नागदौनकल्प कहते हैं जो साधकोंके ऊपर कृपा करके श्रीमहेश्वरने पार्वतीके प्रति कथन किया है नागदमनीकी नाल कृष्णवर्ण कडवीतूंबीके समान पत्ते होते हैं, पीले फूल नागदौन नामसे यह लोकमें प्रसिद्ध है, दरिद्र और जरा रोगकी शान्त करनेवाली ईश्वरी नाम यह महा औषधी नैमिषारण्य और पुष्करादिमें विशेष कर प्राप्त होती है, यह पुष्य नक्षत्रयुक्त अच्छे दिनमें शिवभगवानादिक देवतोंको प्रणाम करके पूर्वदिनमें औषधीको निमन्त्रण पूर्वक ग्रहण करे। शिर, कान कंठ, हाथ, दोनों भुजाओंमें मुद्रिकारूपसे अंगुलीमें देवताओंके पूजन करने उपरान्त धारण करे, अर्थात् ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन कराय पीछे उन्हें भोजनसे तृप्त कर धारण करे तो यह सबको वशीभूत करती है शास्त्रसम्पन्न बुद्धि करती है, विघ्नोंको नाश करती, अग्नि जल सिंह सर्प, वृश्चिकादिके विष और भयको दूर करती, विवाद, शत्रु संकट में रक्षा करती निगडबंधन और शूल आरोपणसे रक्षा करती अनेक विष और दुष्ट व्रणोंपर गोमूत्र मिलाय लेप करे तो उनको दूर करती है।

भक्षयेद्वर्षमेकन्तु घृतेन मधुना सह।
सर्वरोगविनिर्मुक्तो वलीपलितवार्जितः॥ १॥

यदि इसको घी और शहतके साथ एक वर्ष खाय तो मनुष्य सब रोगोंसे रहित वली और पलित (श्वेत वाल हो जाना) इससे रहित हो जाता है ॥ १॥

जीवेद्वर्षसहस्रं तु महातेजा महाबलः ।
पञ्चवर्षसहस्रेण लक्षायुर्जायते नरः ॥ २ ॥

इसके सेवन करनेसे सहस्र वर्षतक महातेजसम्पन्न होकर जीता है अधिक कालतक सेवन करता ही रहे तो पांच सहस्र तथा लक्ष वर्षकी आयु होती है । (फल श्रुतिः) ॥ २ ॥

नवनागबलो भूत्वा स्वेच्छया रमते भुवि ।
मधुना सह लेपेन रामा च वशवर्तिनी ॥ ३ ॥

तरुण वा नौ हाथियोंके समान बलिष्ठ होकर स्वेच्छतासे भूमि में विहार करता है और मधुके साथ मिलाय वरांगपर लेप करे तो स्त्री वशीभूत होती है ॥ ३ ॥

एवं गोक्षीरेण पेषयित्वा घृतेनाऽऽलोड्य ।
दम्पती पीत्वा दीर्घजीविनम्पुत्रं लभेते ॥

इसी प्रकार इसको गौके दूधके साथ पीसकर दोनों स्त्री पुरुष पान करें तो दीर्घजीवी पुत्र होता है ।

प्रतिपाकं कृतं वंगं तस्या रसे निषेचयेत् ।
ईश्वरीमूलचूर्णं च वंगस्स्तम्भयते त्रिभिः ॥ ४ ॥

तथा इसके रसमें वंगको मर्दनकर शंकरजटाका चूर्ण मिलाकर सेवन करे तो स्तंभन होता है शुक्र पुष्ट होता है ॥ ४ ॥

नागिन्याभ्रकसंयुक्तः सूतो मृश्येत बुद्धिमान् ।
मर्दनात्सेवनाच्चैव रसः सर्वार्थवेधकृत् ॥ ५ ॥

नागदौन अभ्रक और पारा यह समान ले मर्दन करने तथा सेवन करनेसे यह रस सब अर्थका वेध करता है ॥ ५ ॥

षोडशांशेन तत्सूतं वमते सर्वधातुषु।
समूलपत्रमुद्धृत्य यवक्षारेण योजयेत् ॥ ६ ॥

इसका सोलहवां अंश डाला हुआ पारा सब धातुओंको उगलता है वा इस नागदौनकी जड और पत्र लेकर जौके खारसे संयुक्त करके ॥ ६ ॥

पारदे मर्दयित्वा तु चार्कतापेन शोषयेत्।
मुनिवृक्षरसं नीत्वा तस्य कल्कं तु कारयेत्।
विंशत्यंशेन तत्सूतं सर्वलोहानि विध्यति ॥ ७ ॥

पारेमें खरल करके धूपमें सुखाले वा अगस्तके रसमें इसका कल्क करके इसमें वीसवां अंश पारा डाले तो इसके प्रयोगसे सब लोहोंका वेध होता है ॥ ७ ॥

अथ ताम्रपत्रादिशुद्धिः

नागिनीरससिक्तानि शुल्वपत्राणि लेपयेत्।
द्रावयित्वा निषेकेन दलशुद्धिस्तदा भवेत ॥ ८ ॥

नागदमनीके रसमें ताम्रपत्रोंको लेपन कर फिर अग्निके निषेकद्वारा द्रवीभूत करनेसे ताम्रपत्र शुद्ध होते हैं ॥ ८ ॥

कुमारी ब्रह्मगर्भा च निर्गुण्डी रसपूर्तिका।
सर्वलोहानि सिंचन्तः ततः कर्म समारभेत ॥९॥

घीकुवार हरड़र निर्गुण्डी मालकांगनी इनसे लोहोंको प्रथममें सिक्तकर पश्चात् काय आरम्भ करे (ब्रह्मरोम रसपालिका) कहीं ऐसा भी पाठ है ॥ ९ ॥

तेनैव षोडशांशेन तारं वेधेत्त कांचनम् ।
नागंव्योषसमं कृत्वा यवं टंकणसंयुतम् ॥ १० ॥

इसीसे सोलहवें अंशसे तारपत्र और सुवर्णका वेध होता है सीसा सोंठ मिर्च पीपल इनको समान भाग ले फिर जवाखार सुहागा इनको लेकर ॥ १० ॥

द्रावयित्वा निषेके चेत्पंचमाहिषके तदा ।
पुनर्नवारसेनैव लोणीरसयुतेन च ॥ ११ ॥

उन वस्तुओंको सिक्तकर द्रवीभूत कर भैंसेकन्दकी पांच भावना दे फिर पुनर्नवाके रस और नोनियाके रससे ॥ ११ ॥

निषेकश्च त्रिधा कुर्यात्पुनः शुष्कं त्रिधापि च ॥
नागिन्याःस्वरसं क्षीरमजामूत्रेण सेचयेत् ॥ १२ ॥

तीनवार पुट देकर फिर तीनवार सुखावे फिर नागदौनके रस दूध और बकरेके मूत्रकी इसको पुट दे ॥ १२ ॥

एवं सप्तविधं तारं सेचनीयं प्रयत्नतः । तारेण
सह देवेशि रसं वेधयते बुधः ॥ १३ ॥

इस प्रकार विधिसे सातबार तारपत्र (चांदीके वरकों) को सेचन करे तो हे देवी ! इससे रस वेध होता है ॥ १३ ॥

ताभ्यां चतुर्दशांशेन तारेणार्द्धं नियोजयेत् ।
भवेद्धेम हि दिव्यन्तु तरुणादित्यवर्चसम् ॥१४॥

इन दोनोंका चौदहवां अंश और तार (चांदीके वर्क) आधा-भाग युक्त करे तब यह सुवर्ण दिव्य तरुण सूर्यके समान प्रकाशित होता है ॥ १४ ॥

नागिनीरसमपामार्गरसं तत्र निधापयेत् ।
निर्गुण्डी च स्नुहीक्षीरं सूतकं लवणानि च ॥१५॥

नागदमनीका रस चिरचिटेका रस निर्गुण्डी थूहरका दूध पारा और सौंचरलोन ॥ १५ ॥

एकत्र मर्दयेत्सूतं स्वेदयेच्च विचक्षणः । सप्त-
रात्रप्रयोगेण निर्मुखो गगनं ग्रसेत् ॥ १६ ॥

इन सबके साथ एकत्र कर पारेको मर्दन करे पीछे स्वेदन करे तो सात रातके प्रयोगसे यह निर्मुख होकर गगन ग्रासी होता है ॥ १६ ॥

कर्तव्यं च शुभे लग्ने योगे च करणे शुभे ।
सुगन्धपुष्पधूपैश्च पूजयित्वा महेश्वरम् ॥
तस्य पूजनकाले तु क्षीरषष्टिकभोजनम् ॥ १७ ॥

यह अच्छी लग्न करण प्रयोगमें करना चाहिये सुगंधित पुष्प धूप दीपसे महेश्वरका पूजन करे इसके पूजनमें दूध और सट्टीके चावल खाने चाहिये ॥ १७ ॥

रसबन्धं प्रवक्ष्यामि येन सिध्यन्तिसाधकाः ।
पारदस्य पलं ग्राह्यं तुत्थकस्य पलं तथा ॥ १८ ॥

अब पारेका बन्ध कहता हूं जिससे साधक सिद्ध होते हैं पारा चार तोले नीला थोथा चार तोले ॥ १८ ॥

नागिन्यास्तु रसं ग्राह्यं ह्यजामूत्रं तथैव च ।
क्राथयेद्वाह्निना प्राज्ञ शुल्वपत्रेण लेपयेत ॥ १९ ॥

इनका नागदोनका रस और अजामूत्र लेकर अग्निमें क्राथ करे और ताम्रपत्रपर लिप्त करे ॥ १९ ॥

स्वेदयेन्मर्दयेच्चैव अहोरात्रं तु सुन्दरि ।
गुटिकाभक्षणे चैव सर्वलोहानि विध्यति ॥ २० ॥

हे सुन्दरि ! इसको एक दिन रात्रिपर्यन्त स्वेदन और मर्दन करे इस गुटिकाके भक्षणसे सम्पूर्ण लोहोंका वेध होता है ॥ २० ॥

एवं तं जारितं कृत्वा सप्तरात्रं विधानवित् ।
चतुःषष्टिकवेधी स्याद्द्विसप्ताहेन सुन्दरि ॥ २१ ॥

इस प्रकार विधानका जाननेवाला इसको जारित करके चौदह दिनमें ६४ वेधी होती है ॥ २१ ॥

शतवेधी त्रिसप्ताहे सहस्रं वेधते प्रिये ।
चतुर्थे सप्तके प्राप्ते लक्षवेधी भवेत्तु सः ॥ २२ ॥

तीन सप्ताहमें सहस्र वेधी और चार सप्ताहमें लक्षवेधी होता है ॥ २२ ॥

पञ्चके सप्तके प्राप्ते कोटिवेधी भवेद्रसः ।
षष्ठे च वेधके प्राप्ते गुंजायाः कोटिवेधकः ॥ २३ ॥

पांचवें सप्ताहके प्राप्त होनेमें कोटिवेधी होता है छटे सप्ताहके प्राप्त होनेमें एक गुंजामात्रसे कोटिवेधी होती है ॥ २३ ॥

अष्टमे सप्तके प्राप्ते स्पर्शवेधी भवेद्रसः ॥
नवमे सप्तके प्राप्ते ह्युद्योतनकरो भवेत् ॥ २४ ॥

अष्टमसप्ताहमें यह रस स्पर्शमात्रसे वेधी हो जाता है नवम सप्ताहमें उद्योतन करनेवाला होता है ॥ २४ ॥

दशमे सप्तके प्राप्ते स महारस उच्यते ।
महारसे तु संप्राप्ते को न मुंचाति बन्धनम् ॥ २५ ॥

दशम सप्ताहमें यह महारस हो जाता है और महारसके प्राप्त होनेमें बन्धनसे कौन मुक्त नहीं होता ॥ २५ ॥

इति श्रीपण्डितसुखानन्दसूरिसूनु–पण्डितज्वालाप्रसाद मिश्रकृतभाषाटीकायां नागदमनीकल्पःसमाप्तःशुभमस्तु ।

अथ शिवलिङ्गीकल्पः ४

ॐ श्रीईश्वरि सर्वदानववशकारिणि सर्वजन-विमोहिन्यै स्वाहा । इत्यमुना च मंत्रेण गंधा-दिभिरनुष्ठितान् ॥ त्रिधा सूत्रेण संवेष्ट्य गुटि-कां संप्रपूजेयत् ॥ १ ॥

ॐ ईश्वरी इत्यादि मंत्र पढ गंध आदिसे तीनतारके सूतसे लपटा गोलीका पूजन करे ॥ १ ॥

पुष्ये वा रेवतीऋक्षे गृहीत्वा गुटिकां पिबेत् ।
क्षीरशुद्धेन रत्यर्थं रमतेथ सहस्रशः ॥ २ ॥

पुष्य अथवा रेवती नक्षत्रमें इस गोलीको दूधके संग पिये तो अथवा रेवती नक्षत्रमें इस गोलीको दूधके संग पिये अनेक वार स्त्रियोंसे रमण कर सकता है सहस्रोंसेभी नहीं थकता ॥ २ ॥

भावितं पञ्चशतधा तन्मूलं कनकांबुना ।
तत्तैलस्य विलेपेन शत्रुनाशो भवेद्ध्रुवम् ॥ ३ ॥

सौवार धतूरेके रसमें इसकी जडको भावित करके उसका तेल निकाल शत्रुको लगावे तो वह नष्ट होता है ॥ ३ ॥

गङ्गाम्बुपिष्टं तत्कल्कं लेपेनांगेन मोहनम् ।
सद्यो जयति दुर्वारं वैरिणं विजयी भवेत् ॥ ४ ॥

और गंगाजलके साथ पीसकर इसका कल्क बनावे और शरीररपर लेप करे तो सबको मोहित करता है और शीघ्रही दुर्जय शत्रुको जीत विजयी होता है ॥ ४ ॥

धृता शिरसि पुष्यार्के मन्त्रमुच्चारपूर्ववत् ।
ऐश्वरीं सकलां भीतिं निहंतीति न संशयः ॥ ५ ॥

इतवारके दिन पुष्यनक्षत्रमें इसको शिरपर धारण करे तो निःसन्देह सबप्रकारके भयको दूर करती है ॥ ५ ॥

सहदेवीश्वरीमूलं मयूरशिखया सह । ततः
प्रदक्षिणीकृत्य भक्त्या स्तुत्वा प्रणम्य च ॥ ६ ॥

सहदेई शिवलिंगीकी जड मोरशिखा इन सबको अच्छे दिनमें प्रदक्षिणा कर भक्तिसे स्तुति कर प्रणाम करे ॥ ६ ॥

तत्र सूर्योदयात्पूर्वं मंत्रमष्टोत्तरं शतम् । जप्त्वा
च पादलेपेन दिनेनैकेन मानवः ॥ ७ ॥

और सूर्योदयसे पहले १०८ बार मन्त्र जपकर इस औषधीको रणपर लेप करे तो मनुष्य एकही दिनमें ॥ ७ ॥

विंशद्योजनगो भूत्वा पुनरेतीति चालयेत् ।
रोचनामूलमैश्वर्य्याः सुकल्कीकृत्य चांबुना ८

बीसयोजन जाकर फिर लौट कर आसकता है गोरोचन शिवलिंगीकी जड सुन्दर जलमें इनका कल्क बनाय ॥ ८ ॥

जप्त्वा चाष्टोत्तरशतं पूर्वमंत्रं विचक्षणः । श्री-
खण्डमीश्वरीमूलं कुंकुमागरुटंकणम् ॥ ९ ॥

बुद्धिमान् पूर्वोक्त मंत्रका १०८ वार जपकर चन्दन शिवलिंगीकी जड, कुङ्कुम, अगर, सुहागा ॥ ९ ॥

रोचना च समं सर्वमेतदंगानुलेपनात् ।
दर्शनस्पर्शनादेव नरनारीविमोहनम् ॥ १० ॥

गोरोचन इन सबको समान भाग लेकर शरीर पर लेप कर दर्शन स्पर्श करनेसेही स्त्रीपुरुषोंको मोहित कर सकता है ॥ १० ॥

समंत्रं मानिनं वापि स्ववशं कुरुते नरम् ।
ईश्वरीमूलमादाय ग्रहणे सोमसूर्ययोः ॥ ११ ॥

मंत्रपूर्वक लेप करनेसे अभिमानीकोभी मोहित करसकता है, चन्द्रमा वा सूर्यके ग्रहणमें शिवलिंगीकी जडको लावर ॥ ११ ॥

चूर्णितं नेत्रयोर्न्यस्त गृहस्थं वा गृहापदम् ।
समस्तरोगशांतिस्स्यादीश्वरीमूलसेवनात् १२

उसे चूर्णकर नेत्रोंमें आंजे अथवा हाथपर रक्खे तो घरकी सब विपत्ति दूर होती हैं, तथा सब रोगोंका शांति होती है यह इसकी मूल सेवनका फल है ॥ १२ ॥

तदेव नस्ये विन्यस्तं कांजिकेन विषापहम् ।
तदेवाशनसंयुक्त जंगमादिविषंहरेत ॥ १३ ॥

इसीकी मूल कांजीके साथ नस्यमें देनेसे विषको दूर करती है भोजनगें खानेसे सर्पादिके विषको दूर करती है ॥ १३ ॥

इति शिवलिंगीकल्पः ॥

अथ पलाशकल्पः ५

पातालयन्त्रमाहृत्य पलाशतरुबीजकम् ।
निष्कद्वयमितं तैलं मध्वाज्येन समं पिबेत ॥ १ ॥

डाकके बीजोंको लेकर पातालयंत्रसे उनका तेल निकाले उस तेलको नौ मासे लेकर शहत और घीसे पिये ॥ १ ॥

मासमात्रेण योगीन्द्रो नक्षत्राण्यपि पश्यति ।
अनेककालजीवी स्यात्प्रियो मान्यःसुरासुरैः २

तीन महिने बराबर पीनेसे योगीन्द्र होता है दिनमें नक्षत्र देखने लगता है देवता और दैत्योंसे स्तुतिको प्राप्त हो अनेक वर्षों तक जीता है ॥ २ ॥

धात्रीरसेन तद्बीजचूर्णं सम्यग्विभावयेत् ।
सप्ताहं पयसा तद्वच्छोषयित्वा ततः पुनः ॥ ३ ॥

और ढाकके बीजोंका चूर्ण कर आमलेके रसमें भली प्रकारसे भावना दे फिर सात दिन दूधमें भिजावे पश्चात् ॥ ३ ॥

सप्ताहं सेवनात्तस्य दूरदृष्टिर्भवेन्नरः ।
तेजसा सूर्यसंकाशो आह्लादे चन्द्रमा इव ॥ ४ ॥

उसके सात दिन सेवनसे मनुष्यकी दूर दृष्टी हो जाती है वह तेजमें सूर्यके समान और सुख देनेमें चन्द्रमाकी समान हो जाता है ॥ ४ ॥

अतिदारुणवेगेन वायुं बुद्ध्या बृहस्पतिम् ।
वाचा सरस्वतीं जित्वा जीवेदाचंद्रतारकम् ॥५॥

दारुण वेगसे पवनको बुद्धि कर बृहस्पतिको वाणीसे सरस्वती को जय कर चन्द्र सूर्यकी स्थिति पर्यन्त प्राणधारण करता है (फलस्तुतिः) ॥ ५ ॥

आतपे शोषितं तस्य प्रसूनजनितं रजः ।
क्षीरेणार्द्रीकृतं स्निग्धभांडे विन्यस्य संस्थितम् ६

ढाकके पत्तोंको धूपमें सुखाय उसकी राखको दूधमे भिजोकर चिकने बरतनमें रख छोडे ॥ ६ ॥

एकविंशद्दिनादूर्ध्वं सुमूहर्ते शिवांतिके ।
तद्भक्षेत्पयसाहारं कांजिकाम्लादिवर्जितम् ॥ ७ ॥

फिर २१ दिनके उपरान्त शुभ मुहूर्तमें शिवजीकी मूर्तिके निकट दूधके संग उसको भक्षण करे और कांजी आदि खट्टे पदार्थों को न खाय ॥ ७ ॥

एकविंशद्दिनात्तस्य कल्पेन खेचरो भवेत् ।
बलेन जायते भीमसेनतुल्यपराक्रमः ॥ ८ ॥

२१ दिन इस कल्पके सेवनसे आकाशचारी हो सकता है तथा पराक्रममें भीमसेनके समान हो सकता है ॥ ८ ॥

जरामरणनिर्मुक्तो न कदाचित्क्षयं व्रजेत् ।
तद्वच्चूर्णं समादाय पलमात्रं पिबेद्यदि ॥ ९ ॥

वह जरामरणसे रहित हो क्षयको प्राप्त नहीं होता और इसके चूर्णको चार तोले ग्रहणकर ॥ ९ ॥

चतुःपलेन दुग्धेन मासमात्रं न संशयः ।
तन्मूत्रेणप्रशांतोष्णं ताम्रं स्वर्णत्वमाप्नुयात् ॥१०॥

सोलह तोले दूधके संग एक महीनेतक पान करे तो उस मनुष्यका मूत्रमें वुझाया हुआ तांबा सोना होजाता है ॥ १० ॥

अनेककालजीवी स्यात्कंदर्प इव मूर्तिमान् ।
ब्रह्मवृक्षस्य पंचागं छायाशुष्कं सुचूर्णितम् ॥११॥

और कामदेवके समान मूर्तिमान् होकर बहुत कालतक जीवित होता है, ढाकका पंचांग लेकर छायामें उसको सुखाले ११

मध्वाज्याभ्यां लिहेत्कर्षं वर्धयेत्तु जरां जयेत् ।
जीवेद्वर्षसहस्रैकं दिव्यकायो भवेन्नरः ॥ १२ ॥

शहत और घीके साथ एक तोला खानेसे बल बढता और बुढापा दूर होकर सहस्रायुवाला होता है ॥ १२ ॥

ब्रह्मवृक्षं सितं स्थूलं छेदयेर्धभागतः । अध-
स्त्वरत्निहस्तं स्यात्तस्य मूर्ध्नि बिलं कृतम् ॥१३॥

सफेद ढाकके स्थूल वृक्षको मध्य भागसे काटकर कुछ कम एक हाथ प्रमाण नीचेको दल रक्खे और काष्ठके मस्तकपर बिल करे ॥ १३ ॥

पंचजातीफलैः पूर्य तत्काष्ठेन निरुध्य च ।
कुशैस्तु वेष्टयेत्सर्वं लेप्यं मृद्गोमयैः पुनः॥ १४ ॥

उसमें पांच जायफल भरके उसी ढाकके काठसे मुख बन्दकर कुशाओंसे बांध मट्टी गोबरसे लीपदे ॥ १४ ॥

आवेष्ट्य वस्त्रखंडेन ततो मृद्गोमयैर्लिपेत् ।
शुष्के गजपुटे देयं परितोरण्यकोद्भवैः ॥ १५ ॥

फिर वस्त्र लपेट फिर मट्टी गोबरसे लीप सुखाय गजपुट यन्त्र में चारों ओर अरने उपले रख उनमें पकावे ॥ १५ ॥

स्वांगशीतलमुद्धृत्य सद्रवानि फलानि च ।
रक्षेन्मध्वाज्यसंयुक्तभांडं तान्येव भक्षयेत् ॥१६॥

जब वह पककर ठंढा होजाय तब बेल आदिमें द्रवसहित हुए उन फलोंको शहत घीसे युक्त हुए बासनमें धर रक्खे पीछे भक्षण करे ॥ १६ ॥

यथेष्टभुग्गृहांतस्थः क्षीराहारी जरां जयेत् ।
छिद्रं पश्यति मासेन निधानानि च भूतले ॥१७॥

इच्छापूर्वक भोजन करता हुआ घरके भीतर रहे दूधका भोजन करे तो बुढापेको दूर करे एक महीनेतक सेवन करनेसे भूमिमें द्रव्यके छिद्र देख सकता है स्थानोंको जान सकता है ॥ १७ ॥

जीवेद्ब्रह्मदिनं यावत्सर्वरोगविवर्जितः । पत्रं
पुष्पं फलं ग्राह्यं सुक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ॥ १८ ॥

वह सब रोगोंसे रहित हो ब्रह्माके दिन पर्यन्त जीसकता है । ढाकका पत्र, पुष्प, फल, ग्रहण कर सूक्ष्म चूर्ण करे ॥ १८ ॥

कृष्णागोक्षीरसंयुक्तं भक्षयेद्वा समाहितः ।
द्विरष्टवर्षकायोसौ जीवेद्वर्षशतत्रयम् ॥ १९ ॥

इसको काली गौके दूधके सङ्ग पिये और सावधान होकर भक्षण करे तो सोलहवर्षकी अवस्था समान होकर तीनसौ वर्षतक जीता है ॥ १९ ॥

तस्य पुष्पस्य निर्यासं तालकेन सुभावितम् ।
तेन तालस्य कल्केन द्वात्रिंशांशेन वेधितम् ॥
वंगं भवति तत्तार कुन्दपुष्पेण सन्निभम् ॥ २० ॥

इसीके फूलोंके रसमें हरतालको भिगोवे फिर हरतालके कल्पसे ३२ वार लपेटकर अग्निमें तपाया हुआ रांग कुन्दके फूलके समान श्वेत चांदी हो जाता है ॥ २० ॥

तस्य पुष्परसं चैव गन्धकं चैव भावितम् ।
लिप्तानि शुल्वपत्राणि पुटपाकेन कांचनम् ॥ २१ ॥

और उसीके फूलोंके रसमें गन्धककी भावना देकर उसके संग उसे तांबेके पत्रोंमें लपेटकर पुटपाकसे तपानेसे सोना हो जाता है ॥ २१ ॥

तस्य बीजस्य यत्तैलं गन्धकेन सुमर्दितम् ।
पारदं तेन कल्केन द्वात्रिंशत्कांचनं भवेत् ॥२२॥

ढाकके बीजोंके तेलको गन्धक और पारेके साथ मर्दन करनेसे फिर तांबेपर यह कल्क लपेटे तो २५ दिनमें तपानेसे तांबा सोना हो जाता है ॥ २२ ॥

श्वेतपालाशपञ्चांगं चूर्णितं मधुना सह ।
कर्षेकं भक्षयेन्नित्यं व्याधिमृत्युजरापहम् ॥ २३ ॥

सफेद ढाकके पंचांगके चूर्णको शहतके संग १ तोला निरंतर खाय तो व्याधि मृत्यु बुढापा दूर होते हैं ॥ २३ ॥

ब्रह्मायुर्जायते सिद्धिःस्पर्शमात्रे न संशयः ॥ २४ ॥

तथा ब्रह्माके समान आयु होवे और स्पर्शमात्रसे ही निःसन्देह सिद्धि होती है ॥ २४ ॥

ॐ अमृतं कुरु अमृतमालिन्यै नमः । अमृत-मन्त्रेण सर्वे योगाः सप्तभिर्मंत्रिताः करणीयाः२५॥

"ॐ अमृतं कुरु अमृतमालिन्यै नमः" यह मंत्र है इससे सात वार अभिमंत्रित कर सब योग करने चाहिये ॥ २५ ॥

इति श्रीपण्डितप्रवरसुखानन्दसूनुपंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकासहितः पलाशकल्पः समाप्तः ॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

